ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

द्युमन्तं शुष्ममाभर। सामवेद 1325
हे शक्ति दायक प्रभो ! हमें शुभ शक्ति दो।
O the Bestower of strength! Beston on us the strength that will bring glory.

वर्ष 38, अंक 36 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 जुलाई, 2015 से रविवार 26 जुलाई, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अशिक्षा, अंधविश्वास और आधुनिक भारत

पाखण्ड और अन्धविश्वास को खत्म करने के लिए सरकार कानून बनाये या न बनाये लेकिन आर्य समाज इसे समाप्त करने के लिए कृतसंकल्पत है

जाहिर सी बात है पाखण्ड और अन्धविश्वास के मामलों पर जब तक केन्द्र सरकार सख्त कानून नहीं बनाएगी तब तक इस तरह के अपराधों में कोई कमी नहीं आयेगी लेकिन इन मामलों के बढ़ने का सबसे बड़ा कारण यह है कि ज्यादातर मामले पिछड़े, गरीब और आदिवासी समुदायों में होते हैं जिस कारण कोई भी केन्द्र सरकार ध्यान नहीं देती, वहीं राज्य सरकार की संवेदना भी किसी मामले में तब जाग्रत होती है जब कोई मामला मीडिया या विपक्षी नेताओं के हाथ लग जाता है और छोटा-मोटा मुआवजा देकर अपने कर्त्तव्यों से इतिश्री कर ली जाती है।

महर्षि दयानन्द ने सर्व प्रथम सन् 1867 में हरिद्वार के कुम्भ मेले के शुभावसर पर ''पाखण्ड खण्डिनी पताका'' का शुभारम्भ किया था। महर्षि दयानन्द द्वारा चलाए गये इस अभियान को आर्य समाज लोगों में जागरूकता लाने के लिए आज भी इसे निरन्तर चला रहा है। देश की सरकार इस विषय में कानून बनाये या न बनाये लेकिन आर्य समाज, समाज में व्याप्त इस कोढ़ को खत्म करने के लिए कृत संकल्पत है और हमेशा रहेगा।

भारत में महिला अपराध की वास्तविकता का हाल बयान करने के पूर्व एक छोटी सी कहानी बताना चाहूंगा। एक बार एक बूढ़ा शैतान बैठा था उससे एक जवान शैतान ने आकर कहा कि लोग सत्य की खोज में जा रहे हैं। अगर लोगों को सत्य का ज्ञान हो गया तो हमारा अस्तित्व हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा। इस पर बूढ़े शैतान ने हंसते हुए कहा हमारा अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा, क्योंकि हर सौ लोगों की भीड़ में कुछ शैतान पाखण्डी पुजारी के वेष में जरूर उपस्थित रहते हैं जो लोगों को कभी सत्य और धर्म का ज्ञान नहीं होने देते, और वे लोगों को अन्धविश्वास के जाल में फंसाये रखते हैं। इस कहानी का जीता-जागता उदाहरण हाल ही में असम के सोनितपुर जिले के विमाजुली गांव में 63 साल की 'ओरंग 'नाम की एक महिला पर डायन होने का आरोप लगाते हुए भीड़ ने उसका सिर काट कर मार डाला। आरोप है कि किसी पुजारी के कहने पर करीब 200 लागों की भीड़ ने इस कृत्य को अंजाम दिया। ठीक इससे पहले 3 जुलाई 2015 को मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में एक आदिवासी महिला को डायन घोषित कर कुछ लोगों के द्वारा उसके साथ घिनौना कृत्य किया गया था। देश में महिलाओं को अत्याचार से बचाने के लिये कहने को तो सरकार ने कई कानून बनाये लेकिन डायन या चुड़ैल बताकर प्रताड़ित करने वालों के खिलाफ कोई सख्त कानून नहीं बनाया जिस कारण अपराधी के मन में कानून का कोई खौफ नहीं है। पुलिस इन मामलों में मामूली सी धाराएं लगाकर मामला दर्ज करती है जिस कारण अपराधी को कड़ी सजा नहीं मिल पाती और यही वजह है कि समाज में औरतों को प्रताड़ित करने का यह घिनौना कृत्य रुकने का नाम नहीं ले रहा है । देश के कुछ विकसित राज्यों को यदि छोड़ दिया जाये तो देश के पिछड़े राज्यो में खासकर असम, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्यप्रदेश और पूर्वी उत्तर के कुछ जिलों में डायन के नाम पर औरतों के साथ प्रताड़ना के मामलों में दिन प्रतिदिन इजाफा ही हुआ है और इन मामलों में सबसे बड़ी विडम्बना ये है कि ऐसी घटनायें अकेले में या छुपकर नहीं बल्कि समाज के सामने और खुले आसमान के नीचे होती हैं। दु:खद बात यह है कि इन घिनौने कृत्यों पर पीड़ित महिला के प्रति समाज संवेदनाशून्य पाया जाता है। पिछले दिनों मध्य प्रदेश के संधावा (इन्दौर) में रहने वाली टेटलीबाई और लीलाबाई को इस वजह से मौत का मुँह देखना पड़ा कि गाँव के ही एक निवासी भीमसिंह के कहने पर गांव की पंचायत ने उन्हें डायन घोषित किया था। भीम सिंह को लगता था कि उसकी बीमारी का कारण इन दोनों के द्वारा किये गये जादू-टोने हैं। इसी कारण भीमसिंह ने एक रात दोनों महिलाओं का गला रेत कर हत्या कर दी।

जाहिर सी बात है इन मामलों पर जब तक केन्द्र सरकार सख्त कानून नहीं बनाएगी तब तक इस तरह के अपराधों में कोई कमी नहीं आयेगी लेकिन इन मामलों के बढ़नें का सबसे बड़ा कारण यह है कि ज्यादातर मामले पिछड़े, गरीब और आदिवासी समुदायों में होते हैं जिस कारण कोई भी केन्द सरकार ध्यान नहीं देती, वहीं राज्य सरकार की संवेदना भी किसी मामले में तब जाग्रत होती है जब कोई मामला मीडिया या विपक्षी नेताओं के हाथ लग जाता है और छोटा-मोटा मुआवजा देकर अपने कर्त्तव्यों से इतिश्री कर ली जाती है। स्थानीय प्रशासन और भी कागजी कार्रवाई के अलावा कभी ऐसा कोई कार्य नहीं करता जिससे इस नारी विरोधी प्रवृत्तियों में कोई सुधार किया जाये जिस कारण महिलायें इन पाशविक कृत्यों का शिकार होती रहती हैं।

राजस्थान की वसुंधरा राजे सरकार को धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने गरीब व अशिक्षित महिलाओं को बचाने के लिये ''डायन प्रताड़ना कानून'' प्रभावी किया जो महिलाओं को डायन, चुड़ैल के नाम पर होने वाले अत्याचारों से बचाने में कारगर सिद्ध हुआ है। कुछ भी हो एक सभ्य समझे जाने वाले और तेजी से विकास की और बढ़ने वाले भारत में इस तरह की घटनाएं होना कहीं न कहीं हमारी आधुनिकता शिक्षा और विकास पर एक प्रश्न चिह्न जरूर लगाती हैं। देश की सरकार को इस विषय में महर्षि दयानन्द के आदर्शों को अपनाना आवश्यक है क्योंकि महर्षि दयानन्द ने सर्व प्रथम सन् 1867 में हरिद्वार के कुम्भ मेले के शुभावसर पर ''पाखण्ड खण्डिनी पताका'' को फहराया। महर्षि दयानन्द द्वारा पाखण्ड व अन्धविश्वास के खिलाफ चलाए गये इस अभियान को आर्य समाज के लोगों में जागरूता लाने के लिए आज भी इसे निरन्तर चला रहा है। देश की सरकार इस विषय में कानून बनाये या न बनाये लेकिन आर्य समाज, समाज में व्याप्त इस कोढ को खत्म करने के लिए कृत संकल्पत है और हमेशा रहेगा।

-राजीव चौधरी

अफवाओं से सावधान

आजकल श्री आनन्दकुमार आर्य अवैधानिक व भ्रामक समाचार फैलाने में लिप्त हैं। उनकी संगठन विरोधी गतिविधियों के कारण सार्वदेशिक सभा ने उन्हे उपप्रधान पद से हटा दिया था। वे सार्वदेशिक सभा के किसी पद पर नहीं है। किन्तु वे अभी भी अपने को अवैधानिक रूप से कार्यकारी प्रधान लिख कर समाजों को और प्रान्तीय सभाओं को भ्रमित कर रहें है। चाहे जिसे पद से हटाने या सभाओं को भंग करने आदेश दे रहे हैं। उनका यह कार्य असत्य अवैधानिक और संगठन को तोड़ने वाला है। उनको ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। उनके द्वारा किया गया ऐसा कोई भी कार्य या आदेश प्रभावहीन व औचित्यहीन है। इसी कारण उनके विरूद्ध आवश्यक व कानूनी कार्यवाही भी की जावेगी।

वे सार्वदेशिक सभा कैप्टन देवरत्न पक्ष के सहयोगी नहीं है और ना उनका सभा से कोई सम्बन्ध रहा है। इसी लिए दिनांक 25/03/2013 की सर्वदेशिक सभा की सम्पन्न हुई बैठक के पश्चात् से सभा की किसी भी अन्तरंग या साधारण सभा की बैठको में उनकी उपस्थिति नहीं है। कार्यकारी प्रधान का कोई वैधानिक पद है ही नहीं।

अत: समस्त आर्य जनों व जन साधारण को सूचित किया जा रहा है कि श्री आनन्द कुमार आर्य के किसी भी पत्र या आदेश को सार्वदेशिक सभा के पत्र या आदेश के रूप में मान्य नहीं किया जावे। उनकी ओर से सभा के नाम पर दिया कोई भी पत्र या आदेश एक षडयन्त्र है और अवैधानिक है और किसी भी समाज या प्रान्तीय सभा पर बन्धनकारी नहीं है। ऐसे पत्र पर विश्वास करके कोई भी आर्य जन उसे सार्वदेशिक सभा का आदेश न माने।

आर्य सुरेशचन्द्र अग्रवाल
उपप्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दिल्ली

आत्म-ज्योति को प्रकाशित कर दो

गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम्।
ज्योतिष्कर्त्ता यदुश्मसि।। -ऋ. 1/86/10
ऋषि :- **राहूगणो गोतमः।।** देवता- **मरुतः ।।** छन्दः- **गायत्री।।**

शब्दार्थ- मरुतः- हे प्राणो! **गुह्यं तमः** - गुहा के अंधेरे को **गूहत**- विलीन कर दो **विश्वं अत्रिणम्**- सब खा जानेवालों को **वि यात**- भगा दो। **यत् उश्मसि** - जिसे हम चाह रहे हैं उस **ज्योतिः**- ज्योति को **कर्त्त**- हमारे लिए कर दो।

विनय- हे मरुत देवो! हे प्राणो! हम अंधेरी गुफा में पड़े हुए हैं। चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा है। इस अंधेरे में खा जाने वाले राक्षस हमें सता रहे हैं, हमें खाये जो रहे हैं, उन्हें भगाओ। इन सब ''अत्रियों'' को हमसे दूर कर दो। हमें जो कुछ चाहिए वह प्रकाश है। हमें प्रकाश दो, इस गुफा में चारों ओर प्रकाश फैला दो। मैं पञ्चकोशों की अंधेरी गुफा में रह रहा हूं-शरीर, प्राण, मन आदि के पांच शरीरों में बन्द पड़ा हुआ हूं-अपने-आपको भूलके इन शरीरों को आत्मा समझ रहा हूं। इसलिए काम, क्रोध, लोभ आदि राक्षस मुझे खाये जा रहे हैं। ये काम, क्रोध आदि अज्ञान में ही रह सकते हैं। आत्मान्धकार में ही ये फलते-फूलते हैं। इसलिए हे प्राणो! तुम मेरे गुहा के अन्धकार को विलीन कर दो। अन्धकार के हटने पर ये 'अत्रि' अपने-आप ही यहां से भाग जाएंगे। जब हम में आत्म-ज्योति फैल जाएगी, सब भूतों, सब प्राणियों में फिर आत्मा दिखाई देने लगेगा तो हम किसके प्रति क्रोध करेंगे? जब हमारा प्रेम सर्वव्यापक हो जाएगा तो हम किस एक में कामासक्त होंगे? लोभ किस लिए करेंगे? ओह, आत्म-ज्योति का प्रकाश हो जाने पर ये क्षुद्र ''अत्रि'' कहां ठहर सकते हैं! आत्म-ज्योति वह ज्योति है जिससे सहस्त्रों सूर्य, चन्द्र और विद्युत् प्रकाशित हो रही हैं, जिस परमोज्ज्वल ज्योति के सामने हजारों सूर्यों की इकट्ठी ज्योति भी फीकी है- वह प्रकाश हमें दो। हम उस प्रकाश के पाने के लिए तड़प रहे हैं। उस प्रकाश के पा जाने पर तो सब-कुछ हो जाएगा, हृदय का अंधकार मिट जाएगा और इन खा जाने वालों से हमारी रक्षा हो जाएगी। हे प्राणो! तुम प्रकाश के लाने वाले हो। हम जानते हैं कि तुम्हारे जागने पर प्रकाशावरण का क्षय हो जाता है। इस सत्य में हमें विश्वास है। इसलिए हे प्राणो! हम तुमसे विनय कर रहे हैं। तुम हम में समाकर हमारे प्रकाश का द्वार खोल दो।

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

- विजय आर्य
मो. 09540040339

सम्पादकीय

समाप्त होती संवेदनशीलता

प्राणी जगत की श्रृंखला में मानव को संवेदना के मामले में सबसे आगे रखा जाता है। लेकिन पिछले कुछ सालो में मनुष्य जाति की संवेदना निरंतर मरती जा रही है। संवेदना के नाम पर कुछ कानून बना दिये जाते हैं, कुछ को सहानुभूति जताकर कुछ पैसे या सम्मान पुरस्कार थमा दिये जाते हैं। विगत वर्षों में देखा जाए तो 1979 का गीता व संजय चोपड़ा केस से सारी दुनिया हिल गयी थी जिसके लिए सरकार को उसके हत्यारों को फांसी देकर गीता व संजय के नाम पर पुरस्कारों की घोषणा तक कर डाली थी लेकिन आज न जाने कितनी गीता व कितने ही संजय सड़कों पर मरते रहते हैं जिन्हें हाथ लगा तो दूर उनके पास दो मिनट रुकने तक का समय नहीं होता ऐसे में राष्ट्रीय सम्मान की बात तो कोसों दूर की बात है। शायद आज संवेदना पूर्णतः मर चुकी है। लेकिन एक बार फिर 16 दिसम्बर 2012 को लोगों की संवेदना पुनः जीवित हो गयी जब दामिनी की नृशंस हत्या का केस सामने आया। दामिनी के नाम पर कानून तो बन गया लेकिन उसके हत्यारों को सजा दिलाने में हमारी सरकार नाकाम रही। शायद संवेदना कागज के टुकड़ों में दबती चली गयी। संवेदनशील होने का अर्थ यह नहीं कि हम यह कहकर चल दिये गलत हुआ बल्कि संवेदनशीलता का अर्थ है। हम अब यह कृत्य नहीं होने देगें यह तो रही राष्ट्रीय संवेदना की बात अब यदि अन्तर्राष्ट्रीय संवेदना की बात करें तो जब इराक में हजारों यजीदी समुदाय की लड़कियों, औरतों को आइ.एस.आइ.एस. के आतंकी सिगरेट के दामों में बेचते हैं तब दुनिया की मानवता का ठेकेदार अमेरिका मूक पाया जाता है, किन्तु जब हिसार के चर्च की नींव हिलती हैं तो वह भारत से दो टूक जवाब मांगता है क्यों ? क्या उन यजीदी समुदाय की मातृ शक्ति के चीरहरण की चीखों के मुकाबले चर्च के पत्थर ज्यादा जोर से रोये थे कि अमेरिकी राष्ट्रपति तक की संवेदना जाग गयी। वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हमला हुआ तो अमेरिका समेत सब यूरोपीय समुदाय को साथ लेकर ओसामा बिन लादेन को मार देता है किन्तु जब बोको हरम नाईजिरिया में इस्लाम स्वीकार न करने पर गांव के गांव को आग लगा देता है तो तब मानवीय मूल्यों पर संवेदना दिखाने वाला ठेकेदार चुप बैठ जाता है। मैं सिर्फ अमेरिका को दोष नहीं देता जब भारत में ही एक ईसाइ नन के साथ कुछ लोग छेड़छाड़ करते हैं तो भारतीय मीडिया नन के प्रति इतनी संवेदना प्रकट करती जैसे द्रोपदी चीरहरण के बाद हिन्दुस्तान में कोई दूसरा अन्याय हुआ हो। किन्तु जब सीरिया में 150 मासूम लडकियों का अपहरण होता है तब भारत के ये न्यूज चैनल इस मामले की निन्दा, भर्त्सना करने के बजाय निर्मल दरबार दिखा रही होती है। मैं राजनेताओं को तो संवेदना के मामले में शुन्य समझता हूँ। पिछले वर्ष जब कुछ सीमा पर तैनात जवान हमले में शहीद होते हैं तब बिहार के एक मंत्री ने कहा था इस पर हम क्या संवेदना प्रकट करें। जवान तो मरने के लिये ही होते हैं। जब ऐसे संवेदनशील और दुःखद अवसर पर देश के मंत्री और नेता ऐसे बयान देंगे तो आम नागरिकों से क्या उम्मीद की जा सकती है और इन बयानों का नतीजा होता है कि नक्सली दिन दहाड़े हमारे जवानों की हत्या कर सड़कों पर फैंक देते हैं। कहना इतना है कि आज भागती-दौड़ती जिन्दगी में किसी भी मुददे पर आम-जन की संवेदना इस कदर बिखर गयी है कि आम-जन के सामने हत्या लूट-पाट हो जाती है और वह सिर्फ तमाशबीन बनकर देखता रहता है लेकिन कब तक? महाभारत में एक प्रसंग आता है जब पांडव पुत्र सरोवर के किनारे अचेत होते हैं तब उन्हें जीवित करने के लिये यक्ष, युधिष्ठर से एक प्रश्न यह भी पूछता कि दुनिया में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? तब धर्मराज युधिष्टर जवाब देते हुए कहते हैं - इस दुनिया में रोजाना हजारों लोग मरते है और फिर भी हम यह सोचकर जीते हैं कि हमारी मृत्यु कभी नहीं होगी, न हमारे साथ कुछ गलत होगा। अक्सर आम-जनों के सामने कुछ गलत हो रहा होता है उस समय लोग संवेदनशील होने के बजाय ये सोचकर चल देते हैं कि हमारे साथ थोड़े ही कुछ हो रहा है या मेरा इससे क्या लेना-देना और जब घटना बड़ी बन जाती है तो वही लोग सड़कों पर मोमबत्ती लेकर पैदल मार्च कर अव्यवस्था फैलाने निकल लेते, किन्तु सामने हो रहे दुराचार का विरोध नहीं करते । अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक और लेखक शिव खेड़ा कहते हैं जब आपका पड़ोसी किसी के द्वारा हिंसा का शिकार हो रहा होता है और आप चुप होते हैं तो अगला नम्बर आपका होगा अर्थात् आपको अपनी संवेदना जिन्दा रखने की जरूरत है, मृत संवेदना के साथ जीवन पशुता के समान है, विचारें जरूर.....।

-सम्पादक

बोध कथा

सहनशक्ति ने स्वभाव बदला

एक युवती नव-वधू बनकर ससुराल में आई तो जो सास उसको मिली- हे मेरे भगवान्! दुर्वासा का अवतार! दिन में दो-तीन बार जब तक लड़ न लेती, उसे भोजन नहीं पचता था। वधू आई तो उसने सोचा-'अब घर में ही लड़ लो। बाहर लड़ने के लिए काहे को जाना?' बहू को वह बात-बात पर ताने देने लगी-'तुम्हारे बाप ने तुम्हें क्या सिखाया है? तुम्हारी मां ने तुम्हें क्या यही शिक्षा दी है? तेरी जैसी मूर्खा तो मैंने कभी देखी नहीं।'

बहू यह सब-कुछ सुनती और सुनकर भी मौन ही रहती। सास चिल्लाकर कहती -'अरी! तेरे मुख में जीभ नहीं है?' बहू फिर भी शान्त बनी रहती।

उसके मौन को देखकर सास का जिव्हा रूपी घोड़ा क्रोध की सड़क पर द्रुत-गति से दौड़ने लगता। प्रतिदिन ऐसा ही होता। पास-पड़ोस के सभी लोग इस व्यवहार को देखते, मन-ही-मन सोचते-यह सास है या डायन?

एक दिन वह इसी स्रकार बहू पर बरस रही थी, पर बहू मौन थी। सास कह रही थी -'अरी, पृथिवी पर लात मारें तो वह भी शोर करती है और मैं इतना बोल रही हूं, फिर भी तू चुप है। तू तो मिट्टी से भी गई-बीती है!'

तभी एक पड़ोसिन ने कहा, -'बुढ़िया! लड़ने की बहुत इच्छा है, तो आकर हमसे लड़। तेरा चस्का पूरा हो जाएगा। इस बेचारी गाय के पीछे क्यों पड़ रही है, जो उत्तर भी नहीं देती?'

वधू ने तुरन्त उठकर कहा -'नहीं, इन्हें कुछ भी मत कहिये। ये मेरी मां हैं। मां ही बेटी को नहीं समझाएगी तो फिर कौन समझाएगा।'

सास ने यह बात सुनी तो लज्जित हो गई। फिर कभी उसने क्रोध नहीं किया। बहू की सहनशक्ति ने सास का स्वभाव बदल दिया।

ओ३म् किस धातु से बना है?

हरियाणा के लोक कवि पण्डित बस्तीराम ने ऋषि के दर्शन किये और जीवनभर वैदिक धर्म का प्रचार किया। शास्त्रार्थ की भी अच्छी सूझ थी। एक बार पौराणिकों से पाषाण-पूजा पर उनका शास्त्रार्थ हुआ। पौराणिक पण्डित से जब और कुछ न बन पड़ा तो अपनी परम्परागत कुटिल, कुचाल चलकर बोला, 'आपका ओ३म् किस धातु से बना है?' पण्डितजी व्याकरण के चक्र में पड़कर विषय से दूर जाना चाहते थे। पण्डित बस्ती रामजी सूझ वाले थे। श्रोताओं को सम्बोधित करके बोले, ''ग्रामीण भाई-बहनो! देखो, कैसा विचित्र प्रश्न यह मूर्ति पूजक पण्डितजी पूछ रहे हैं कि आपका ओ३म् किस धातु से बना है। अरे! सारा संसार जानता है कि हम प्रतिमा-पूजन नहीं मानते। इसी विषय पर तो शास्त्रार्थ हो रहा है। अरे पण्डितजी! हमारा 'ओ३म्' तो निराकार है, सर्वव्यापक है। वह न पत्थर से बना, न तांबे से, न पीतल से और न चांदी-सोने से। तुम्हारा गणेश किसी भी धातु से बना हो, भले ही मिट्टी का गणेश बना लो। हमारा ओ३म् तो सब जानते हैं धातु से नहीं बन सकता।'' सब ग्रामीण श्रोता पण्डित बस्ती राम व वैदिक धर्म की जय-जयकार करने लगे। पौराणिक पण्डित भी बड़े चकराये कि वह आप ही अपने जाल में ऐसे फंसे कि निकलने का समय ही न मिला।

चिन्तन से दूर, चिन्ता से भरपूर, हमारी जीवन यात्रा

चिन्तन के लिए व्यवस्थित, सहयोगी व सही दिशा के विचारों का संग्रह मस्तिष्क में होना जरूरी है। यदि विचार ही नहीं हैं तो चिन्तन उस स्तर तक सहायक नहीं हो सकेगा। श्रेष्ठ व पर्याप्त विचारों के लिए ज्ञान वृद्धि और अनेक विद्याओं का संग्रह आवश्यक है। यह संग्रह स्वाध्याय से अथवा सत्संग से प्राप्त हो सकता है। किन्तु आज स्वाध्याय के नाम पर तो निरन्तर शिथिलता आती जा रही है। पुस्तकें, पुस्तकालयों में दर्शनीय वस्तु के रूप में सजाकर रखी हैं। बड़े-बड़े वाचनालय स्वाध्याय व ज्ञान वृद्धि के लिए बनाए गए थे जिनमें पहले अक्सर पढ़ने वालों की भीड़ लगा करती थी। आज उनमें से कई बन्द हो गए। कुछ ने कुछ और स्वरूप धारण कर लिया है और कुछ तो नाम मात्र के हैं जो कुछ अखबारों या पत्र पत्रिकाओं तक सिमट कर रह गये हैं।

आज के मानव की स्थिति बड़ी विचित्र है, यह जीवन यात्रा कठिन से कठिन होती जा रही है। परिवार, पैसा, पद का अभाव जिनके पास है वे तो चिन्तित हैं ही जिनके पास ये सब पर्याप्त मात्रा है वे भी चिन्तित हैं। चिन्ता को चिता से अधिक हानिकारक बताया है। यह संसार की आज एक ज्वलन्त समस्या बन चुकी है। अभाव में वह मनुष्य जिसके पास उसके भाव की पूर्ति का साधन न हो, वह यदि चिन्तित रहता है तो उसको उतना दोषी नहीं माना जा सकता, किन्तु वह व्यक्ति जो किसी वस्तु का अभाव महसूस कर रहा हो और वह वस्तु उसके पास उपलब्ध हो, फिर भी वह अभाव में जिए तो इसे दुर्भाग्य या कर्महीनता ही कहा जाना चाहिए।

ईश्वर ने मनुष्य को वह बहुमूल्य सम्पत्ति बुद्धि के रूप में प्रदान की है, जिसका उपयोग कर वह अनेक प्रकार के दु:खों, कष्टों, चिन्ताओं से बच सकता है। परमात्मा ने उसे सामर्थ्य दिया, साधन दिए और इनके उपयोग के लिए ज्ञान भी दिया। इनका सही उपयोग नहीं होने के कारण जीवन में अभाव, दु:ख, कष्ट और फिर इनके ही कारण चिन्ता के दलदल में मनुष्य धंसता जा रहा है। किन्तु केवल चिन्ता किसी परेशानी का निदान नहीं है अपितु उससे मुक्ति हेतु चिन्तन से ही इन सब परेशानियों का निदान हो सकता है। चिन्तन वह पूंजी है जिसमें अनेक मार्ग हमारे सामने प्रशस्त हो जाते हैं। चिन्तन ही वह है जो हमारे जीवन का मूल्यांकन कर सकता है और चिन्तन से ही हम अपनी जीवनधारा को मन चाही दिशा में प्रवाहित कर सकते हैं।

आज का मनुष्य चिन्तन से दूर है इसीलिए वह चिन्ता से भरपूर है। यह चिन्ता हमें किसी अज्ञात क्षति होने, अथवा क्षति होने की संभावना के कारण, किसी अज्ञात भय के कारण या मन की प्रतिकूलता से संबंधित घटना के विचार या व्यवहार के कारण होती है। मनुष्य भयभीत है, चिन्तित है, चिन्ता में डूबा रहता है जो बीत गया उस भूतकाल के कारण और आने वाले भविष्य से, इस कारण वह अपना वर्तमान इन दोनों के कारण बिगाड़ देता है।

चिन्तन के लिए व्यवस्थित, सहयोगी व सही दिशा के विचारों का संग्रह मस्तिष्क में होना जरूरी है। यदि विचार ही नहीं हैं तो चिन्तन उस स्तर तक सहायक नहीं हो सकेगा। श्रेष्ठ व पर्याप्त विचारों के लिए ज्ञान वृद्धि और अनेक विद्याओं का संग्रह आवश्यक है। यह संग्रह स्वाध्याय से अथवा सत्संग से प्राप्त हो सकता है। किन्तु आज स्वाध्याय के नाम पर तो निरन्तर शिथिलता आती जा रही है। पुस्तकें, पुस्तकालयों में दर्शनीय वस्तु के रूप में सजाकर रखी हैं। बड़े-बड़े वाचनालय स्वाध्याय व ज्ञान वृद्धि के लिए बनाए गए थे, जिनमें पहले अक्सर पढ़ने वालों की भीड़ लगा करती थी। आज उनमें से कई बन्द हो गए। कुछ ने कुछ और स्वरूप धारण कर लिया है और कुछ तो नाम मात्र के हैं जो कुछ अखबारों या पत्र पत्रिकाओं तक सिमट कर रह गये हैं।

वेद की एक सूक्ति है ''स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमादितव्यम्।'' अर्थात् स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद न करें। आज कौन स्वाध्याय कर रहा है जबकि ज्ञानमयी पुस्तकों का स्वाध्याय जीवन को एक सही मार्ग दिखाता है। कहा गया है - अनेक शंसयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकं, सर्वस्य नेत्रं शास्त्रं नास्त्यधं एव स:। अर्थात शास्त्रों के अध्ययन से अनेक प्रकार के संशय दूर हो जाते हैं जिन्हें हम प्रत्यक्ष रूप से देख नहीं पाते उनकी भी हमें जानकारी हो जाती है। सभी मनुष्यों के ज्ञान चक्षु तो शास्त्र ही हैं। जिनके पास ये ज्ञान चक्षु नहीं हैं वे तो अन्धे ही हैं।

कहने का तात्पर्य यह कि मनुष्य के पास ज्ञान नहीं है तो जीवन में अन्धेरा ही अन्धेरा है और अन्धेरे में गलत मार्ग पर जाने की संभावना अधिक रहती है। अन्धेरे मार्ग में ही किसी गड्ढ़े में गिरने, पत्थर, कांटों आदि से चोंट लगने का भय रहता है, जो दु:ख, कष्ट और चिन्ताओं को जन्म देते हैं। आज का मनुष्य भौतिकता की चकाचौंध में ज्ञान रूपी प्रकाश की अवहेलना करके अज्ञान रूपी अन्धेरे को ही महत्त्व दे रहा है। बिना सही चिन्तन मानवीय जीवन अधूरा है। यह भी ध्यान रहे सत्य ज्ञान के अभाव में किया हुआ चिन्तन भी गलत राह पर ले जा सकता है। इसलिए स्वाध्याय से जीवन को ज्ञानमय बनाना आवश्यक है।

ज्ञान का दूसरा आधार सत्संग है। सत्संग का अर्थ सत्य का संग जिससे यथार्थता का बोध हो, जीवन उन्नति का मार्ग जहां से दिखाई दे, समस्याओं के निवारण का जहां ज्ञान मिले वही सत्संग है। सत्संग से ज्ञान वृद्धि होती है, जीवन के अनेक उलझे हुए प्रश्नों

...शेष पेज 6 पर

व्यंग्य

यंत्र टेण्डर

प्राचीन काल में देश मंत्रों से चलता था। मनुष्य जीवन मंत्रों पर आधारित था। प्रात: काल में वैदिक मंत्रोउच्चारण से घर, गाँव शहर, राजधानियां गूंजा करती थीं। धीरे-धीरे धर्म के सौदागरों ने मंत्रों को किनारे किया और षड्यन्त्रों से काम करना आरम्भ कर दिया। किन्तु इक्कीसवीं सदी आते-आते षड्यन्त्र, यन्त्रों से चलने लगे।''

खैर सरकार चितिंत थी, कि भारत निर्माण कैसे किया जाये' लोगों को रोजगार कैसे दिये जायें, भय, भूख, भ्रष्टाचार कैसे खत्म हो।' विपक्ष दिन पर दिन हावी होता जा रहा है। देश का अन्नदाता भूख से आत्महत्या कर रहा है, कहीं बाढ़ तो कहीं भूकम्प से लोग त्राहिमाम कर रहे हैं। इन सब आपदाओं का सामना कैसे किया जाए। इस विषय पर देश के राजा ने एक आपातकालीन सभा बुलायी।

अध्यक्ष महोदय ने सभी समस्याएं मंत्रिगणों के सामने रखीं और उपाय खोजने को कहा ही था कि एक अति उत्साही नेता ने मंच के निकट आकर कहा, माननीय अध्यक्ष महोदय मैं एक अचूक उपाय बता रहा हूं जिस से सारी विपदाएं निष्फल हो जाएंगीं, आप श्री यन्त्रों का टेन्डर पास करवा दीजिए, सभी समस्याएं खुद ब खुद समाप्त हो जायेगी। सूखे खेत फिर से लहलहा उठेंगे, बंजर भूमि सोना उगलने लगेगी, बाढ़, भूकम्प और किसी भी प्रकार की प्राकृति आपदा से तत्काल छुटकारा मिल जाएगा। किसान खुश। व्यापारी खुश, हम सब खुश देश बहुत जल्द समृद्ध और सुखी हो जायेगा, सालों से बंद पड़े कारखाने चलने लगेंगे, घाटे में चल रहे उधोग-धंधे टैक्स उगलेंगे, बस आप कल सुबह उठकर न्यूज चैनलों पर बिकने वाले लक्ष्मी यन्त्र, शनि यन्त्र, और हनुमान यन्त्र का टेण्डर किसी अच्छे चैनल के नामी-गिरामी पंडित का पास करवा दीजिए। फिर देखिये देश की अर्थ व्यवस्था बुलेट ट्रेन की भांति दौड़ पड़ेगी!''

''इतना सुनते ही, एक अन्य नेता ने खड़े होकर कहा, नेताजी को मैं अपना पूरा समर्थन देता हूं, मैंने तो यहाँ तक सुना है कि इन चमत्कारी यन्त्रों के प्रभाव से बुढ़ापे में होने वाले रोगों से छुटकारा तो मिलता ही है, बूढ़े भी जवान हो जाते हैं, अब की बार लोगों को पेंशन की जगह एक-एक शनियन्त्र भेज देना चाहिए, गरीब, मजदूरों के लिये चल रही नरेगा, मनरेगा योजना बंद कर सब को एक-एक कुबेर यंत्र दे दिया जाये तो उनके पास धन का कोई अभाव नहीं रहेगा।' जनधन योजना में खुले खाते चमत्कारी ढंग से खुद ही धन से भर जायेंगे। बस आप टेण्डर पास करवाने का आदेश कीजिए, फिर देखिए देश कैसे 'मेक इन इंडिया' में तब्दील हो जाएगा और अमेरिका जैसी बड़ी अर्थ व्यवस्था तो आपके चरणों को चूम रही होगी। विश्व बैंक भी हमारे धन के लिए लालायित रहेगा।

अध्यक्ष महोदय ने काफी सोच विचार के बाद पूछा, यन्त्र सफल होगा इस बात की गारंटी कौन लेगा? और यदि यन्त्र इतने प्रभावी हैं, तो वे लोग इन यन्त्रों को बेच क्यों रहे हैं? सब मौन हो गये!!!

अध्यक्ष महोदय ने अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए एक असमंजस भरा प्रश्न दागा, मंत्री जी मैं आपकी बात से सहमत हूं पर एक बात मेरे भेजे में नहीं समा रही है कि इन यंत्रों को बेचने वाले ये पंडित लोग स्वयं धनाड्य क्यों नहीं हो जाते, इन्हें शुगर, ब्लडप्रैशर की बीमारी हमेशा क्यों बनी रहती है? क्या इस बात पर कभी आपने विचार किया है कि पिछले हजारों वर्षों से इन पाखण्डी पंडितों ने वैदिक धर्म का लोप और मनुष्य जाति का कितना शोषण किया? अब समय आ गया, हमें इन पाखंडियों से बच कर रहना होगा और मेहनत कर ईश्वर में आस्था रखनी होगी और आत्मनिर्भरता सीखनी होगी, अंधविश्वास से निकलना होगा। इन यन्त्र विक्रेताओं को गिरफ्तार कर लेना चाहिए जो जनता की भावनाओं और जनता के पैसों का शोषण कर रहे हैं जो धर्म के नाम पर सबको ठग रहे हैं, इन पर तत्काल कार्रवाई होनी चाहिए'' जनता के लिए एक नोटिस जारी करवाइये कि इन यंत्र पंडितों (ठगों) से दूर रहे, इनकी बातों में आकर अपनी मेहनत की गाढ़ी कमाई को बरबाद न करें, मेहनत करें और वैदिक धर्म में आस्था रखते हुए अच्छे कर्मो पर अपना ध्यान केंद्रित करे।

-राजीव चौधरी

अंतर्विद्यालयीय एकांकी प्रतियोगिता सम्पन्न

महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर विद्यार्थी उत्तम आदर्श एवं संस्कार सीखकर अपने जीवन में आगे बढ़ेंगे –डॉ. उमा शशि दुर्गा

अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं की श्रृंखला में 17 जुलाई (शुक्रवार) को एकांकी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बिड़ला आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, बिड़ला लाईन्स, कमला नगर के प्रांगण में आयोजित इस प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी और पंडित लेखराम जी के जीवन के प्रेरक प्रसंगों का मंचन किया।

सभी प्रस्तुतियों में विद्यार्थियों ने अपने अभिनय कौशल के माध्यम से सभी का मन मोह लिया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को आर्य विद्या परिषद की ओर से पुरस्कार स्वरूप प्रमाण पत्र व कॉमिक्स भेंट की गई और प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीम को ट्राफी दी गई। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती सुनीता खुराना ने सभी का धन्यवाद किया।

मंत्र लेखन प्रतियोगिता

आर्य विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी पा रहे हैं उत्तम संस्कार: वीना आर्या

22 जुलाई (बुधवार) को महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल शादीपुर खामपुर में मंत्र लेखन अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभिन्न वर्गों में व्यवस्थित इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने गायत्री मंत्र, ईश्वरस्तुति उपासना मंत्र, संगठन सुक्त, राष्ट्रीय प्रार्थना, संध्या मंत्र, स्वस्तिवाचन एवं शांति प्रकरणम् के मंत्रों को लिखा। दिल्ली में आर्य विद्यालयों के इन विद्यार्थियों ने मंत्र लेखन के माध्यम से विद्यालयों में नैतिक शिक्षा और निरन्तर यज्ञ के आयोजन द्वारा प्राप्त ज्ञान का परिचय दिया। सभी प्रतियोगी विद्यार्थियों को आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रोत्साहित और विजेताओं को मैडल व प्रमाण पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती वीना आर्या, श्री भीमसेन कामराह, श्री जोगेन्द्र सिंह रोहिल्ला, श्रीमती तृप्ता शर्मा व विभिन्न विद्यालयों की अध्यापिकाएं उपस्थित रही। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती नीरज मेंहदीरता ने सभी का धन्यवाद किया।

संस्कृत भाषा सीखने के संदर्भ में

आवश्यक बैठक

स्मार्ट क्लास के माध्यम से संस्कृत भाषा सीखने का नवीनतम प्रयोग आर्य समाज विद्यालयों में हो सके। इसके लिए इस नवीन तकनीक का प्रदर्शन व एक आवश्यक बैठक दिनांक 27 जुलाई 2015 दिन सोमवार प्रात: 11 बजे एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में होना निश्चित हुई है। सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से निवेदन है कि सभी उपरोक्त बैठक में समय पर अवश्य उपस्थित हों।

–सुरेंद्र रैली, प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद

अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन

समूह गान प्रतियोगिता	28/07/2015 (मंगलवार)	महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर सुभाष नगर, दिल्ली
मंत्रोचारण प्रतियोगिता	04/08/2015 (मंगलवार)	आर्य वैदिक पाठशाला आर्य समाज, प्रीत विहार, दिल्ली-110092
आशुभाषण प्रतियोगिता	12/08/2015 (बुधवार)	दयानन्द आदर्श विद्यालय आर्य समाज, तिलक नगर, दिल्ली

सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

आज 69वें जन्म दिवस पर 'हम सबके प्रेरणास्रोत और श्रद्धास्पद स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती'

आर्यजगत के एक महान सपूत, सतत संघर्षशील, अन्य गुरूकुलों के प्रणेता तथा वैदिक जीवन मूल्यों के धारणकर्त्ता महात्मा स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी का 69 वां जन्म दिवस है। यह स्वामीजी हमारे ही नहीं वरन् आर्यजगत् के सभी विद्वानों व वैदिक धर्म प्रेमियों के प्रेरणा स्रोत, श्रद्धास्पद व गौरवमय जीवन के धनी महात्मा हैं। आपने अपने जीवन का लक्ष्य वेद विद्या के निरन्तर विकास व उन्नति को बनाकर देश भर में आठ गुरूकुलों की स्थापना व उनका संचालन कर अपना यश व कीर्ति को चहुंदिशाओं व भूमण्डल में स्थापित किया है।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती का संन्यास ग्रहण करने से पूर्व का नाम आचार्य हरिदेव था। आपका जन्म 7 जुलाई, सन् 1947 अर्थात् आषाढ़ शुक्ला द्वितीया संवत् 1904 को हरियाणा के जनपद भिवानी के ग्राम गौरीपुर में माता श्रीमती समाकौर आर्या और पिता श्री टोखराम आर्य जी के परिवार में हुआ था। आपने कुछ समय तक गुरुकुल कालवां रहकर अध्ययन करा। महात्मा बलदेव जी भी इसी गुरुकुल में अध्यापन करते थे। यह वही गुरुकुल है जहां वर्तमान के स्वामी रामदेव जी विद्यार्थी रहे हैं। इस गुरुकुल में रहते हुए आपने मासिक पत्रिका ''वैदिक विजय'' का सम्पादन भी किया। आप हरियाणा में स्वामी इन्द्रवेश के नेतृत्व में कार्यरत आर्यसभा में भी प्रचारक के रूप में रहे।

जिन दिनों आप हरिद्वार में अध्ययन व अध्यापनरत थे, उन दिनों दिल्ली में स्वामी सच्चिदानन्द योगी गुरुकुल गौतमनगर का संचालन कर रहे थे। गुरुकुल की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। योगी जी की प्रेरणा से आपने इसके संचालन का दायित्व सम्भाला। उसके बाद आप एक के बाद दूसरा, तीसरा, चौथा गुरुकुल स्थापित करते रहे। इस प्रकार से आप वर्तमान में 8 गुरुकुलों का संचालन कर रहे हैं। सभी गुरुकुल सन्तोषप्रद रूप से चल रहे हैं। सबके पास अपने भवन, गौशालायें और खेलने के मैदान हैं। 8 गुरुकुल स्थापित करके आपने आर्य जगत में एक रिकार्ड कायम किया है। यह उल्लेखनीय है कि गुरुकुलों में बच्चों से नाम-मात्र का ही शुल्क लिया जाता है। 20 से 30 प्रतिशत बच्चे नि:शुल्क ही शिक्षा प्राप्त करते हैं।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने वेदों के प्रचार प्रसार को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाकर महर्षि दयानन्द के लक्ष्य को पूरा करने का निष्काम, श्लाघनीय व वन्दनीय कार्य किया है। धर्म-अर्थ-काम व मोक्ष की साधना के लिए गुरूकुलों में अध्ययनरत ब्रह्मचारियों की शिक्षा व्यवस्था के लिए तन-मन-धन से सहयोग करना पुण्य कार्य होने के साथ हमें यह मानव धर्म ही प्रतीत होता है। गुरूकुलों को सहयोग करना वैदिक धर्म की रक्षा का ही एक मुख्य साधन है और यही वस्तुत: दान कहाता है। इसी से महर्षि दयानन्द का स्वप्न साकार हो सकता है। ईश्वर भी वेदों का प्रचार व प्रसार चाहता है जिसके लिए उसने सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान दिया था। हम ईश्वर और दयानन्दजी के उद्देश्य को अपना लक्ष्य बनाकर उसे सफल करने में कोई कमी या त्रुटि न रखे और स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के कार्यो को तन-मन-धन से सहयोग देकर उसे बढ़ाने में अपनी पवित्र आहुति देने का सौभाग्य प्राप्त करें।

-मनमोहन कुमार आर्य

23 जुलाई, जयन्ती पर विशेष आधुनिक भारत के निर्माता बाल गंगाधर तिलक

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे कई महानायक हैं जिन्होंने अपने महान कार्यो से देश को स्वतंत्र कराने में अहम भूमिका निभाई। ऐसे ही एक महान नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को आधुनिक भारत का निर्माता भी कहा जाता है। स्वतंत्रता संग्राम के साथ गंगाधर तिलक जी ने शिक्षा पर भी जोर दिया 23 जुलाई 1856 को भारत के रत्नागिरी में जन्मे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी का जीवन एक शिक्षक और शिक्षक संस्था के संस्थापक के रूप में आरम्भ हुआ। इनके पिता श्री गंगाधर रामचन्द्र तिलक साधारण से शिक्षक थे मगर वे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। बचपन से ही पिता के संस्कारों का प्रभाव तिलकजी पर भी पड़ा। बाल गंगाधर तिलक बचपन से ही निडर और अद्भुत प्रतिभा के मालिक थे। अन्याय और अत्याचार इन्हें बिल्कुल भी सहन नहीं होता था। यही कारण है कि एक बार जब इनके अध्यापक ने इन्हें अकारण दण्ड दिया तो इन्होंने उसका प्रतिरोध करते हुए कहा ''जब मैंने अपराध ही नहीं किया तो मैं क्यों दण्ड पाऊं।'' तिलक की इस निर्भीकता को देखकर अध्यापक न केवल दंग रह गये बल्कि उन्हें इस बात का भी अहसास हो गया था कि वह बालक आगे चलकर अवश्य कोई महान कार्य करेगा। अपने दादाजी से तात्या टोपे तथा महारानी झांसी की रानी आदि क्रांतिवीरों की कथाएं सुनते थे तो ये बहुत उत्तेजित हो जाते थे।

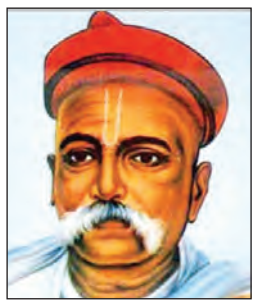

...1905 में वाईसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन किया तो तिलक ने बंगालियों के द्वारा इस विभाजन को रद्द करने की मांग का पुरजोर समर्थन किया था ब्रिटिश वस्तुओं के बहिस्कार की वकालत की जो बाद में एक देशव्यापी आन्दोलन बन गया तिलक के अनुसार स्वराज्य प्राप्ति के अधिकार की भावना उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से मिली।...

कानून स्नातक होने के बाद इन्होंने अपनी प्रतिभा के चमत्कार दिखाना आरम्भ किये। इन्होंने पूना के न्यू इंगलिश स्कूल, डक्कन एजूकेशन सोसाईटी तथा फर्ग्यूसन कालेज की व्यवस्था अपने हाथों में लेकर शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किया। केसरी और मराठा इनकी आवाज के पर्याय बन गये जब 1905 में वाईसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन किया तो तिलक ने बंगालियों के द्वारा इस विभाजन को रद्द करने की मांग का पुरजोर समर्थन किया था ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार की वकालत की जो बाद में एक देशव्यापी आन्दोलन बन गया तिलक के अनुसार स्वराज्य प्राप्ति के अधिकार की भावना उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से मिली। महर्षि जी की इस भावना को व्यावहारिक रूप देने के लिए वे जिस समर्पण तथा प्रखरता के साथ कार्यक्षेत्र में उतरे वह अपने आप में एक मिसाल ही है।स्वराज्य के जन्मसिद्ध अधिकार घोषित करके उन्होंने नवयुवकों के रक्त में एक नया संस्कार पैदा कर दिया जो निरन्तर उग्रता धारण करता चला गया। उनके व्यक्तित्व की इस प्रखरता ने ही उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अमर कर दिया। सन् 1897 में तिलक जी मुम्बई विधान परिषद के सदस्य चुने गये और उन्होंने बहुत ही निडरतापूर्वक सरकार के कार्यकलापों की आलोचना की। कमिश्नर रैड तथा एक और अंग्रेज अफसर की हत्या के जुर्म में तिलक जी को 18 महीने के कठोर कारावास की सजा दे दी जबकि इन हत्याओं में तिलकजी का कोई हाथ नहीं था। इसके बाद सन् 1908 में सरकार ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा बनाकर माण्डले जेल भेज दिया। उस समय उनकी आयु 52 वर्ष की थी। जून 1914 को इन्हें कालापानी से रिहा किया गया। इस दौरान इनकी धर्मपत्नी सत्यभामा का निधन हो गया। उस समय तिलक ने मार्मिक शब्दों में कहा कि वे देश की दुर्दशा पर इतने रो चुके हैं कि अपनी जीवन संगिनी की मृत्यु पर रोने के लिए उनके पास आंसू ही नहीं बचे हैं। असल मायनों में आधुनिक भारत की नींव रखने वाले लोकमान्य तिलक को देश आज भी याद करता है। आज के नेताओं को इस महान शख्सियत से सबक लेने की आश्यकता है।

आर्य समाज 'सी' ब्लॉक पंखा रोड, जनकपुरी द्वारा डॉ. सत्यपाल सिंह सांसद एवं पूर्व पुलिस कमिश्नर का स्वागत व अभिनन्दन

दिनांक 10.7.2015 को डॉ. सत्यपाल सिंह माननीय सांसद, लोकसभा बागपत क्षेत्र का सानिध्य प्राप्त हुआ जिसमें सायं 6 से 7 बजे तक राम मन्दिर (सनातन धर्म मंदिर सी-3 ब्लॉक जनकपुरी) में वरिष्ठ नागरिक मंत्र के समक्ष तथा शाम 7 से 8 बजे तक आर्य समाज सी ब्लॉक पंखा रोड जनकपुरी में ओजस्वी व्याख्यान हुए।

प्रथम राम मंदिर (सनातन धर्म मंदिर) सी-3 ब्लॉक जनकपुरी में बोलते हुए डॉ. सत्यपाल जी ने वृद्धावस्था पर स्वास्थ्य का रख-रखाव किस प्रकार किया जाए उसके महत्त्व पर प्रकाश डाला।

तत्पश्चात् आर्य समाज सी ब्लॉक पंखारोड जनकपुरी में डॉ. सत्यपाल सिंह, सांसद जी का भव्य स्वागत उपस्थित आर्य जनता ने पुष्प माला पहना कर किया। प्रधान आर्य समाज सी ब्लॉक जनकपुरी द्वारा डॉ. साहब को सम्मान स्वरूप शॉल ओढ़ाकर एवं ओ३म का प्रतीक चिह्न भी भेंट किया गया। **-शिव कुमार मदान, प्रधान**

ग्रंथ परिचय

वेदभाष्य के दो नमूने

प्रश्न 1. : महर्षि को चारों वेदों का भाष्य करने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई?

उत्तर : महर्षि भली प्रकार जान गये थे कि भारत की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक अवनति का मुख्य कारण वैदिक शिक्षा का लोप और पौराणिक शिक्षा का प्रसार है। वेद का वास्तविक स्वरूप महाभारत युद्ध के पश्चात् विभिन्न मत-मतान्तरों की आंधी से सर्वथा ओझल हो गया है। (सत्यार्थ प्रकाश, 11वें समुल्लास की अनुभूमिका) समस्त आर्ष ग्रन्थों के अनुशीलन और अध्ययन से वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि नवीन भाष्यों (उब्बट, महीधर, सायण आदि द्वारा किये गये) के कारण ही वेदों का वास्तविक और शुद्ध स्वरूप दूषित हो गया है। जब तक वेदों का प्राचीन शुद्ध स्वरूप प्रकट नहीं होगा, तब तक आर्य जाति का उत्थान और कल्याण होना सम्भव नहीं है, अत: उन्हें आर्य जाति, वैदिक शिक्षा एवं आचार-विचार के पुनरुत्थान के लिए प्राचीन आर्ष पद्धति के अनुसार वेदों का भाष्य करने की आवश्यकता महसूस हुई थी।

प्रश्न 2. : महर्षि ने वेदभाष्य करने का संकल्प और आरम्भ कब किया?

उत्तर : महर्षि ने वेदभाष्य करने का संकल्प संवत् 1929 के अन्त या संबत् 1930 के आदि में किया और उसके लिए प्रयत्न तभी से आरम्भ कर दिया।

प्रश्न 3. : क्या महर्षि ने सीधा ही वेद भाष्य लिखना प्रारम्भ कर दिया था? अथवा इसकी तैयारी के रूप में कुछ और भी प्रकाशित किया था?

उत्तर : वेदभाष्य लिखने से पूर्व महर्षि ने उसका स्वरूप जनता में प्रकट करने के लिए दो बार 'वेदभाष्य के नमूने' प्रकाशित करवाये थे।

प्रश्न 4. : इन नमूनों में कितने मन्त्रों का भाष्य था?

उत्तर : पहले नमूने में ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र (ओम् अग्निमीले पुरोहितमू) अथवा प्रथम पूरे सूक्त का भाष्य प्रकाशित किया गया था। इसमें संस्कृत के साथ गुजराती और मराठी अनुवाद भी था। पहले मन्त्र के दो प्रकार के अर्थ किये थे-भौतिक और पारमार्थिक। महर्षि ने इसकी भूमिका में लिखा था कि सारे वेदों का इसी शैली में अनुवाद करूंगा। श्री पं. देवेन्द्रनाथ जी के अनुसार, इस नमूने में ऋग्वेद के प्रथम पूरे सूक्त का भाष्य था, जबकि पं. लेखरामजी के अनुसार केवल प्रथम मन्त्र का भाष्य था। प्रमाणों के अनुसार पं. देवेन्द्रनाथ जी की बात सत्य सिद्ध होती है।

दूसरे नमूने में ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त और द्वितीय सूक्त के प्रथम मन्त्र के संस्कृत भाष्य का कुछ अंश छपा था। इसमें प्रत्येक मन्त्र के दोनों प्रकार के (भौतिक और पारमार्थिक) अर्थ दर्शाये गये थे।

प्रश्न 5. : वेद भाष्य के इन नमूनों की क्या आवश्यकता थी?

उत्तर : ऋषि दयानन्द का काल वैदिक ग्रन्थोंकी दृष्टि से एकदम प्रतिकूल काल था। सायण, महीधर, उब्बट आदि के गलत भाष्यों से वेदों के विषयों में अनेक भ्रान्तियां फैल चुकी थीं। उसकी गलत दिशा को मोड़कर आर्ष पद्धति के अनुसार अर्थ करना अत्यधिक साहस का काम था। इस कार्य के लिए केवल जनता से सहायता मिलने की आशा थी। अत: वेदभाष्य के इस भावी स्वरूप को नमूने के तौर पर प्रस्तुत करके महर्षि लोगों के अनुकूल और प्रतिकूल दृष्टिकोण को जानना चाहते थे। आपत्ति करने वालों की शंकाओं का समाधान करके निर्विघ्न रूप से इस कार्य को आगे बढ़ाना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने प्रथम नमूना काशीके पण्डित बालशास्त्री व स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती को तथा कलकत्ता के एवं अन्य स्थानीय पण्डितों को भी भेजा था।

प्रश्न 6. : क्या किसी ने इसका विरोध किया था?

उत्तर : स्वामी विशुद्धानन्द आदि उपर्युक्त पण्डितों ने तो विरोध नहीं किया था परन्तु द्वितीय नमूने पर कलकत्ता संस्कृत कालेज के स्थानापन्न प्रिंसिपल श्री पं. महेश चन्द्र न्यायरत्न और पं. गोविन्दराय ने आक्षेप किये और इस विषयक पुस्तकें भी छपवाई थीं। पं. शिवनारायण अग्निहोत्री ने भी इसके खण्डन में 'दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य रिव्यू' नामक पुस्तक छपवाई थी और रिसाले हिन्द में भी कुछ लेख छपवाये थे।

प्रश्न 7. : क्या महर्षि ने इन सब आक्षेपों का उत्तर दिया था?

उत्तर : हां, महर्षि ने इन सब आक्षेपों का उत्तर 'भ्रान्ति निवारण' नामक पुस्तक में दिया था।

प्रश्न 8. : वेदभाष्य के ये दोनों नमूने कब छापे गये थे?

उत्तर : वेदभाष्य के ये दोनों नमूने क्रमश: कार्तिक सं. 1931 में तथा संवत् 1939 में छापे गये थे।

साभार- महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय

डी.ए.वी. स्कूल हरिपुरा का 30वां स्थापना दिवस सम्पन्न

श्री गुरु जम्भेश्वर डी.ए.वी.सी.सै.प. स्कूल हरिपुरा का 30वां स्थापना दिवस विद्यालय प्रांगण में दिनांक 15 जुलाई 2015 को सम्पन्न हुआ। स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बच्चों के लिए आर्य संत श्री आनन्द स्वामी की स्मृति में विद्यालय प्रांगण में एक पार्क का लोकार्पण किया व विद्यालय में आए मेहमानों ने विद्यालय प्रांगण में वृक्षारोपण किया।

कार्यक्रम में पधारे नवनिर्वाचित प्रबन्धक श्रीमती कुसुम खुंगर, डॉ. सुशील रतन मिगलानी, चेयरमैन सरदार बलबीर सिंह, डॉ. जी.सी. शर्मा व श्री वी.के मित्तल उपस्थित थे।

-प्राचार्य

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फर नगर, उ.प्र. में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फर नगर, उ.प्र. में प्रवेश प्रारम्भ हैं। विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा, अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों को सुयोग्य अध्यापकों द्वारा अध्ययन कराया जाता है। उत्तम संस्कार प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रात: एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौगिक क्रियायें करायी जाती हैं। नये सत्र में प्रवेश हेतु 1 अप्रैल से प्रवेश आरम्भ हो चुके हैं। प्रवेश हेतु छात्र का 5वीं पास होना आवश्यक है। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

आचार्य इन्द्रपाल, मुख्य अधिष्ठाता, मो. 09411929528, श्री प्रेम शंकर मिश्र, प्रधानाचार्य, मो. 09411481624

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का वार्षिक समारोह सम्पन्न

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का वार्षिक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह दिनांक 3 से 5 जुलाई 2015 तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सोल्लास सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओम प्रकाश वर्मा व श्री राम स्वरूपजी का अभिनन्दन किया गया। सम्मेलन में लगभग 122 भजनोपदेशकों ने भाग लिया।

-सत्यपाल मधुर, अध्यक्ष

आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी वेद प्रचार के लिये इंग्लैंड जायेंगे

आर्य समाज के प्रचार हेतु नर्मदांचल होशंगाबाद के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी एक मास के लिये इंग्लैंड जायेंगे। 24 जुलाई से 24 अगस्त 2015 तक आप वहां रहेंगे। इस दौरान बर्लिन्घम, लेस्टर, ईलिंग व लंदन के आर्य समाजों सहित अनेक परिवारों व संस्थाओं में यज्ञ, प्रवचन, उपदेश के कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। इसके पूर्व भी विगत 7 वर्षों में पुरुषार्थी जी मोरिशस, हॉलैंण्ड, थाईलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका, मलेशिया, सिंगापुर, फिजी, सूरीनाम सहित 11 देशों में वैदिक धर्म का प्रचार कर चुके हैं। आर्य समाज, गुरुकुल, पतंजलि समिति तथा अनेक संस्थाओं से जुड़े गणमान्य जनों ने शुभकामनायें दी हैं।

-रामावतार सिंह राजपूत

पृष्ठ 3 का शेष

चिन्तन से ...

का निदान होता है, जीवन में सुविचारों का प्रवाह होता है। इस प्रकार चिन्तन के लिए जो धरातल चाहिए, जो पूंजी चाहिए वह सत्संगों से भी प्राप्त होती है। सत्संग और स्वाध्याय के बिना जीवन पशुवत है। क्योंकि पशु के जीवन में कोई चिन्तन नहीं होता। सामान्य रूप से जो कुछ उसे प्राप्त हुआ वह उसकी शारीरिक, भौतिक आवश्यकताओं की दृष्टि से पर्याप्त होता है।

उसे आगे और कुछ प्राप्त करने की न तो जिज्ञासा होती है न आने वाले कल की चिन्ता होती है। बीते हुए दिनों की या भविष्य की चिन्ता से वह मुक्त होता है। किन्तु मनुष्य जीवन का हर कदम सोच समझकर रखना होता है। वही जीवन की उन्नति या अवनति का कारण बनता है। सुख और दु:ख भी उसके चिन्तन से ही होता है। इसलिए केवल चिन्ता नहीं चिन्ता मुक्त सुखद जीवन यात्रा के लिए एक अच्छे चिन्तन की आवश्यकता है। हमारे विद्वान पूर्वजों तथा ज्ञानी जनों ने धरोहर के रूप में अनेक प्रकार के सुविचार हमारे चिन्तन हेतु सन्देश के रूप में दिए हैं। शास्त्रकार ने कहा - प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नर: चरितात्मन:। किन्नु पशुभिस्तुल्यं किन्नु सत्सपुररूषै रीति। अर्थात् प्रत्येक मनुष्य को यह चिन्तन करना चाहिए कि उसका जीवन पशुतुल्य है या सत्पुरुषों के समान है। चिन्तन विहीन जीवन पशुवत है और एक श्रेष्ठ जीवन की नींव शुभ चिन्तन, मनन पर आधारित कर्मों पर है।

-प्रकाश आर्य, सभामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

23 जुलाई, जयन्ती पर विशेष

शहीदों के सरताज चन्द्र शेखर आजाद

स्वामी दयानन्द सरस्वती अक्सर प्रातकाल: जब सोते भारतीयों को देखते और अंग्रेज अधिकारी कसरत करते मिलते तो स्वामी जी दुखी होकर कहते ''अभी भारत को और गुलाम रहना पड़ेगा'' तब स्वामी जी ने वर्षो से दासता की बेड़ियों में जकड़े लोगों की आत्मा को जगाना शुरु किया। एक हजार साल से गुलाम भारतीयों को तब यह अहसास होना शुरू हुआ कि वे गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उनकी आत्मा ने उनको धिक्कारा और 1857 आते-आते क्रान्ति की चिंगारियों ने ज्वालामुखी का रूप ले लिया तब स्वामी जी ने कहा- ''अब भारत को ज्यादा दिन गुलाम नहीं रहना पड़ेगा, क्योंकि अब हिन्दुस्तान जाग गया है। धीरे-धीरे आजादी के दीवाने हाथ में आजादी की मशाल लेकर निकल पड़ते और एक दूसरे को क्रान्ति की मशाल थमाते चलते। इन्हीं आजादी के मतवालों के बीच 23 जुलाई 1906 तद्नुसार सावन सुदी दूज दिन सोमवार को मध्य प्रदेश में अलीराजपुर रियासत के भावरा ग्राम में माता जगरानी देवी की कोख से एक नन्हीं किलकारी गूंजी जो एक क्रांतिवीर चन्द्रशेखर आजाद के रूप में उभर का सामने आयी। कुछ ही दिनों में आजाद के नाम की गूंज ब्रिटेन तक सुनायी देने लगी।

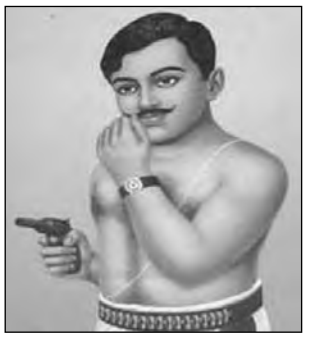

...आजाद के मन में पढ़ाई के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम की भावना भी जाग्रत होने लगी और आजाद सोचने लगे कि कोड़े खाकर या चरखा चलाने से आजादी नहीं मिलेगी। आजादी के लिये क्रान्ति की मशाल जलानी होगी और यहीं से आजाद सशस्त्र क्रान्ति करने वाले दलों की खोज करने लगे। ...

आजाद को बचपन से पढ़ने-लिखने के बजाय तीर-कमान व बन्दूक चलाने में अधिक रुचि थी, लेकिन उनके पिता सीताराम तिवारी ने उन्हें ज्ञान का केन्द्र माने जाने वाले काशी के काशी विद्यापीठ में संस्कृत अध्ययन हेतु भेज दिया। कहते हैं वहां रहकर आजाद ने 'लघुकौमुदी' और 'अमर कोष ' रट लिये । आजाद के मन में पढ़ाई के साथ-साथ राष्ट्रप्रेम की भावना भी जाग्रत होने लगी और आजाद सोचने लगे कि कोड़े खाकर या चरखा चलाने से आजादी नहीं मिलेगी। आजादी के लिये क्रान्ति की मशाल जलानी होगी और यहीं से आजाद सशस्त्र क्रान्ति करने वाले दलों की खोज करने लगे। वे आगे चलकर भारतीय प्रजातन्त्र संघ के सदस्य व सेनापति बने। बचपन में जज के सामने पड़े कोड़ों की मार हो या अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेजों से टक्कर! भारत के बच्चे-बच्चे की जुबान पर आजाद का नाम था। आज भी भारत के सच्चे सपूत आजाद का नाम श्रद्धा भाव से लेते हैं। आजाद अक्सर निर्भीकता और उत्साह से कहा करते थे - ''मैं जीवन की अंतिम सांस तक अग्रेंजो के विरुद्ध लडता रहूंगा।'' उनका लोकप्रिय नारा था- ''दुश्मन की गोलियों का हम सामना करते रहेंगे। आजाद ही रहे हम आजाद ही रहेंगे।''

वेद नित्य और सबके लिये है

वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण नित्य है तथा त्रिकालाबाधित है। प्रत्येक सृष्टि (वैदिक विचार धारा के अनुसार -- ऋग्वेद, 10-190-3; 10-191-2;1-1-2; अथर्ववेद, 6-64-1--सृष्टि और प्रलय प्रवाह से अनादि हैं) के प्रारंभ में उसी प्रकार उसका मनुष्यों के ज्ञानार्थ उदय अर्थात् आगमन होता है। वह कभी बदल नहीं सकता क्योंकि परमात्मा के ज्ञान और कर्म सर्वत: पूर्ण, एकरस तथा एकरूप होते हैं। वास्तव में यह सत्य तथा स्वीकरणीय है कि वेदों के कथन प्राय: सर्वत: मान्य तथा सर्वत: पूर्ण हैं, जो बीज रूप से उन सब मौलिक विषयों पर प्रकाश डालते हैं जो मनुष्य और उसके इस पृथ्वी पर वास से सम्बन्ध रखते हैं। इस पर तो टिप्पणी की आवश्यकता ही नहीं है कि वेद तथा वेद वाक्य सबके लिए उपयोगी हैं।

पूर्व के शीर्षक (वेद ईश्वरीय ज्ञान है) के नीचे दिये गये प्रथम दो उद्धरण स्पस्टत: इस विषय के वैदिक प्रमाण हैं। निम्न अन्य वैदिक उद्धरण अधिक पुष्टि के लिए दिये जाते हैं:--

(1) ''यावद्ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्''--- ऋग्वेद, 10-114-8 **(जहाँ तक ब्रह्म विष्ठित या निहित है उतना ही उसकी वाणी अर्थात् वेद है)।**

(2) ''अग्ने कवि: काव्येनासि विष्ववित्''-- ऋग्वेद, 10-91-3 **(हे प्रकाशक वेद-कर्ता भगवान्, तुम वेद द्वारा ही विश्व में माने जाते हो)।**

(3) ''इमां वाचमभि विश्वे गृणन्त''-- यजुर्वेद, 2-18 **('सब लोग इस वेद वाणी को ठीक तरह ग्रहण करें')।**

(4) ''श्रण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा:'' ऋग्वेद, 10-13-1; (यजुर्वेद, 11-5 **('अमर परमात्मा के सब पुत्र वेद को सुनें')।**

(5) ''सत्यों मन्त्र: कविशस्त ऋग्वेद, 1-152-2 **(कवि स्वरूप भगवान् के कथन, वेद के मन्त्र, सर्वथा सत्य हैं)।**

(6) ''नित्यो वाचा यजीयान्'' - ऋग्वेद,9-6-8 **(वैदिक साहित्य या वेद सनातन हैं और सनातन रूप से प्राप्त किये जाते हैं)।**

(7) ''नित्यों वाचा यजीयान्'' अथर्ववेद, 18-1-30 **(सब कर्म नित्य-शब्द या वेद द्वारा करने चाहिये)।**

(8) ''ऋतेनाभिज्ञावे भवत: सत्यवाचा'' अथर्ववेद, 18-1-30 **(वेद के द्वारा मैं - परमात्मा-तुम्हारा-- तुम्हें सत्य वाणी सुनाता हूँ)।**

मनु (2-11) ने तो यहाँ तक कहा है कि जो वेद का निन्दक है वह नास्तिक है- ''नास्तिको वेदनिन्दक:''।

साभार- वेद और वेद-यज्ञ

अवश्यकता है

आर्य समाज केशवपुरम को एक डाक सेवक की आवश्यकता है

सम्पर्क करें - मनबीर सिंह, मंत्री, मां. 0997182367

आर्य समाज डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-14 फरीदाबाद का 31 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल सैक्टर-14 फरीदाबाद ने अपनी आर्य समाज का 31वां वार्षिकोत्सव दिनांक11 जुलाई 2015 को मनाया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के प्रधान श्री के.एल खुराना ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश जी महाराज ने उपस्थित होकर मानव जीवन में सदैव सदाचार व ईश्वर विश्वास का आश्रय लिए रहने की प्रेरणा दी। बिजनौर के श्री वेदरथी व श्री नेरश दत्त आर्य ने भजनामृत से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय प्राचार्य श्री एस.एस. चौधरी ने समस्त बन्धुओं को महर्षि दयानन्द के वेद पथ पर चलने की प्रेरणा दी। **-हरिओम शास्त्री, मंत्री**

''शत हस्त समाहर सहस्र हस्त सं किर'' - सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर सभा को नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे :-

आर्य समाज संभाजीनगर (औरंगाबाद) द्वारा एकत्रित की गई दान राशि

262.श्री बलवंत राव गुंडेरावजी जोशी	11,000
263. श्री आर्य समाज संभाजी नगर	11,000
264.डॉ. ग.चि. सिमंत अनाथ विद्यार्थीगृह	11,000
265. श्री सत्यदेव वर्मा	1,000
266. पं. अशोकजी नरहर रावजी देव (वेदपाठी)	505
267. श्री मनोजजी चौंडीये	500
268. श्री राजेश घुले राज फोटो स्टूडियो	260
269. श्री वसंतभाई हरिदासभाई भानुशाली	2500
270. श्रीमती स्नेह लता दत्ता	5,000
271.श्री ध्रुव धमनारायण सेठी	5,000
272.श्री जयंतीलाल हरिदासजी भानुशाली	2500
273.श्री अशोक गोकुल प्रसादजी बसेरिया (आरती स्टोन क्रेशर)	3,500
274.श्री हरिभाऊ पाटील (आनन्द लक्ष्मी अंग्रो,प्रा.लि.)	1,000
275.ॲड. श्री ह.भ.पं.गंगाधरजी महाराज घुगे अध्यक्ष, श्री संस्थान एकनाथ मंदिर	5,000
276. सौ.डॉ.मंजुषा नरेन्द्रजी कुलकर्णी (अध्यक्ष दे.ना.स. बैंक)	500
277. श्री शिवाजीराव शेरकरजी (संचालक, दे.ना.स. बैंक)	500
278. श्री अशोकजी पाटील (संचालक, दे.ना.स. बैंक)	500
279. श्री जयन्त प्रल्हादजी अभ्यंकरजी (संचालक, दे.ना.स. बैंक)	500
280. श्री गोपालभाई पटेल (संचालक, दे.ना.स. बैंक)	500
281. श्री नागनाथ सांबाप्पा काजले स्वामी (संचालक, दे.ना.स. बैंक)	500
282. श्री केशव पारटकरजी (संचालक,दे.ना.स. बैंक)	500
283. श्री दयाराम राजाराम बसैये(संचालक, दे.ना.स. बैंक)	500
284. श्री प्रा. संजय गायकवाड़जी(संचालक, दे.ना.स. बैंक)	500
285. श्रीमती नवसाबाई गणपतजी मुंडे	50
286. श्री संजय कुमार मीठालालजी कांकरिया	504
287. श्री जनार्धनजी भड़के,	1,000
288. श्री दत्तात्रयजी मुले	500
289. श्री संभजीराव मुले (संचालक, दे.ना.स. बैंक)	500
290. बैंक खाते में व्यक्तियों द्वारा जमा राशि	4,681

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य संदेश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। -महामंत्री

साप्ताहिक आर्य सन्देश

20 जुलाई से 26 जुलाई, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23 जुलाई/24 जुलाई, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 जुलाई, 2015

आर्यजन कृपया ध्यान दें आर्यसमाजों में प्रचार हेतु एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाओं का लाभ लें

सभी समाजों के अधिकारियों से सानुरोध प्रार्थना करते हुए विशेष सूचना दी जा रही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जो प्रचार वाहन चलाया जा रहा है उसमें बहुत अच्छा भजनीक है जो अपने साथियों के साथ सुन्दर भजन व प्रचार का कार्य कर रहा है। आप इनको वाहन सहित या जिस आर्य समाज मन्दिर के आगे वाहन खड़ा करने की जगह न हो तो भी भजनीक को बुला सकते हैं। वाहन में वैदिक साहित्य प्रचार सामग्री भी उपलब्ध रहेगी। इस वाहन पर होने वाला खर्चा जैसे भजनीक, वादक व वाहन चालक तथा सहायक सभी का खर्चा व वेतन आपकी दि.आ.प्र.सभा द्वारा व्यय किया जाता है। यदि आप इसका लाभ उठायें जिससे प्रचार कार्य सरलता पूर्वक बढ़ता रहे, जिसकी समाज को अपेक्षा है।

सम्पर्क करें- एस.पी. सिंह मो. 9540040324

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज की मिसकॉल सेवा आरम्भ 9211990990

अपने मोबाइल से मिस कॉल दें और पाए नि:शुल्क जानकारी

एस.एम.एस. से जानकारी चाहने वाले सज्जन इस नम्बर पर मिसकॉल करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार हेतु मिसकॉल सेवा आरम्भ की गई। आप इस सेवा का लाभ उठाएं। यदि आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा आर्यसमाज से संबंधित किसी भी प्रकार की कोई जानकारी-सूचना प्राप्त करना चाहते हो तो 09211990990 पर मिसकॉल करें। आपके द्वारा कॉल करते ही कॉल कट जाएगी और आपको **धन्यवाद** संदेश प्राप्त होगा तथा आपका मो. नं. एस.एम.एस. सूची में अंकित हो जाएगा। **-महामंत्री**

चुनाव समाचार

आर्य समाज यमुना विहार, दिल्ली-110053

प्रधान - **श्री सुबोध कुमार शर्मा**
मंत्री - **श्री योगेश शास्त्री**
कोषाध्यक्ष - **श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा**

आर्य समाज मंदिर एवं स्वामी परमानन्द सरस्वती आर्य विद्यालय, परशुरामपुरी, जलालाबाद, शाहजहांपुर (उ.प्र.)

प्रधान - **श्रीमती आशा देवी आर्या**
मंत्री - **श्री प्रमोद कुमार आर्य,**
कोषाध्यक्ष- **श्री विक्रान्त कुमार वैदिक**

आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा

प्रधान - **श्री जे.एस. दुबे**
मंत्री - **श्री राकेश चड्ढा**
कोषाध्यक्ष- **श्री किशोरी लाल दिवाकर**

आर्य समाज हनुमान रोड, दिल्ली

आर्य समाज हनुमान रोड, दिल्ली का चुनाव संपन्न हुआ जिसमें

प्रधान - **कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा**
मंत्री - **श्री दयानन्द यादव**
कोषाध्यक्ष- **श्री विजय दीक्षित**

को पुन: अपने-अपने पदों पर निर्वाचित किया गया।

नि:शुल्क सेवा उपलब्ध

वैदिक विदूषी आचार्या सुनीता शास्त्री जी (रेवाड़ी-हरियाणा) की वैदिक प्रवचनों/भजनों के लिए नि:शुल्क सेवा उपलब्ध है। आर्यसमाजें उन्हें आमंत्रित करने के लिए सम्पर्क करें।

-मो. 09416371926

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह